

स्वरों का वर्गीकरण:- पाँच भागों में बांटा जाता है-

- ① उच्चारण अवधि के आधार पर → (i) लघु स्वर (ii) दीर्घ स्वर
- ② ओष्ठकृति के आधार पर → (i) वृताकार स्वर (ii) अवृताकार "
- ③ जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर → (i) अग्र स्वर (ii) मध्य " (iii) पश्च " "
- ④ मुखाकृति के आधार पर → (i) संवृत स्वर (ii) असंवृत " "
- ⑤ नासिका के आधार पर → (i) निरनुनासिक (ii) अनुनासिक

① उच्चारण अवधि के आधार पर-

(i) लघु स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में कम समय लगता है अर्थात् एक मात्रा का समय लगता है, लघु स्वर कहलाते हैं-

जैसे- अ, इ, उ, ऋ

विशेष- इन्हें मूल स्वर और ह्रस्व स्वर भी कहते हैं

(ii) दीर्घ स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में लघु स्वरों की तुलना में दुगुना समय लगता है अर्थात् दो मात्रा का समय लगता है, दीर्घ स्वर कहलाते हैं-

जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
 ↓ ↓
 सजातीय विजातीय

अ	आ + इ + ई
इ	अ + आ + इ + ई
उ	अ + आ + उ + ऊ
ऊ	अ + आ + उ + ऊ

विशेष- इन्हें संधि स्वर भी कहते हैं।

② ओष्ठाकृति के आधार पर-

(i) **वृताकार स्वर**- वे स्वर जिनके उच्चारण में होंठों की आकृति वृत्त के समान गोल हो जाती है, वृताकार स्वर कहलाते हैं-

जैसे- उ, ऊ, ओ, औ

(ii) **अवृताकार स्वर**- वे स्वर जिनके उच्चारण में होंठों की आकृति वृत्त के समान गोल न होकर फैले रहते हैं, अवृताकार स्वर कहलाते हैं-

जैसे- अ, आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ

③ जिह्वा के आधार पर-

(i) अग्र स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग क्रियाशील रहता है, अग्र स्वर कहलाते हैं-

जैसे- इ, ई, ऋ, ए, ऐ

(ii) मध्य स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग क्रियाशील रहता है, मध्य स्वर कहलाते हैं- जैसे - 'अ'

(iii) पश्च स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा पश्च (पिछला) भाग क्रियाशील रहता है, पश्च स्वर कहलाते हैं-

जैसे- आ, उ, ऊ, ओ, औ

④ मुख्याकृति के आधार पर-

(i) संप्रत स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख प्रत के समान बंद-सा रहता है, अर्थात् सबसे कम खुलता है, संप्रत स्वर कहलाते हैं-
जैसे- इ, ई, उ, ऊ, ऋ

(ii) अर्द्धसंप्रत स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख संप्रत स्वरों की तुलना में आधा बंद-सा रहता है, अर्द्धसंप्रत स्वर कहलाते हैं-
जैसे- ए, ओ

(iii) **विषृत स्वर** - विषृत का अर्थ होता है - 'खुला हुआ'

वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख पूरा खुला रहता है अर्थात् सबसे ज्यादा खुलता है, विषृत स्वर कहलाते हैं -

जैसे - 'आ'

(iv) **अर्द्ध-विषृत** - वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख विषृत स्वरों की तुलना में आधा और अर्द्ध-संवृत स्वरों की तुलना में ज्यादा खुला-सा रहता है, अर्द्ध-विषृत स्वर कहलाते हैं -

जैसे - अ, ऐ, औ

⑤ नासिका के आधार पर-

(i) निरनुनासिक स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिका का प्रयोग नहीं किया जाता अर्थात् सिर्फ मुख से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ, निरनुनासिक कहलाती हैं- जैसे- सभी स्वर

(ii) अनुनासिक- वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिका का प्रयोग किया जाता है, अर्थात् मुख के साथ-साथ नासिका से भी उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ अनुनासिक/सानुनासिक कहलाती हैं-
जैसे- अँ, आँ, ईँ, ईँ, उँ, ऊँ, ऋँ, एँ, ओँ, औँ

व्यंजनों का वर्गीकरण:— दो प्रकार

① उच्चारण प्रयत्न

(i) जिह्वा / अन्य अवयवों द्वारा श्वास के अवरोध के आधार पर (ii) स्वर तंत्रियों में कम्पन्न के आधार पर

(i) स्पर्शी (ii) संघर्षी (iii) स्पर्श-संघर्षी (iv) नासिक्य
(v) उल्क्षिप्त (vi) प्रकम्पित (vii) पार्श्विक (viii) संघर्षहीन

② उच्चारण स्थान

(i) → कंठ्य
(ii) → तालव्य
(iii) → मूर्धन्य
(iv) → दन्त्य
(v) → ओष्ठ्य
(vi) → नासिक्य
(vii) → दन्त और ओष्ठ
(viii) → कंठ और तालु
(ix) → दंत और ओष्ठ
(x) → वत्स्य (xi) → काकत्य